नवांकुर विद्यापीठ, गंजबासौदा

नवांकुर की अभिनव पहल

क्रमशः

अंक 58 माह-अप्रैल-2014

प्रति,

प्रकाशक : नवांकुर-प्रकाशन, गंजबासौदा दूरभाष : 221066, 220769, 223399

अन्दर के पृष्ठों पर

सार-समाचार 1

सज्पादकीय 3

स्कूल इन्फो 4

कैरियर 6

स्वास्थ्य 7

अतिथि की कलम 8

शिक्षक की कलम 8

बच्चों की कलम 10

परीक्षा परिणाम 17

प्रवेश रिक्तियाँ 26

परीक्षा परिणाम विशेषांक

सज्पादक-मण्डलः

शैलेन्द्रकुमार पिंगले ''सुमन''

ओ.पी.श्रीवास्तव

सन्दीप रावत

अजीत सिंह बैस

राजेन्द्र यादव

सुनील भावसार

कु. प्रीति चतुर्वेदी

कु. नीतू तनवानी

मुकेश शर्मा

सार-समाचार

29 वाँ राज्य बना तेलंगाना-लोकसभा के बाद राज्यसभा में भी भारी हंगामे के बीच तेलंगाना का विवादास्पद बिल पास हो गया। आँध्र प्रदेश पुनर्गठन विधेयक - 2014 के पास होते ही देश को तेलंगाना के रूप में 29 वाँ राज्य मिलने का रास्ता साफ हो गया।

370 कि.मी. दूर स्थित है पृथ्वी से अन्तरिक्ष स्टेशन-इस अन्तरिक्ष स्टेशन का आकार एक फुटबॉल मैदान के बराबर है। इसका वजन 4 लाख किलोग्राम से भी ज्यादा है। इसमें छह बेडरूम, दो बॉथरूम और जिम है इसमें 360 डिग्री वाली निर्गत खिड़की से बाहर का नजारा देखा जा सकता है।

कान्हा में एक साथ मिले 2000 से ज्यादा अजगर - म.प्र. के कान्हा नेशनल पार्क के पास करीब एक एकड़ में फैली चट्टानों के नीचे अजगरों का बड़ा समूह मिला है, जिनकी संख्या करीब 1500 से 2000 के बीच है। वनप्राणी इसे शोध का विषय मानते हैं।

विश्व-क्रिकेट में भारत का दबदबा बढ़ा - आई.सी.सी. ने बेहतर प्रशासन के लिए अपने ढाँचे में बदलाव के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी, जिससे परिषद् के राजस्व और अधिकारों के नियन्त्रण में भारत की भूमिका अहम हो जायेगी। पाकिस्तान, श्रीलंका और दक्षिण अफ्रीका के कड़े विरोध के बावजूद आई.सी.सी. के ढाँचे में बदलाव के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गयी। बैठक में पारित प्रस्ताव के मुताबिक बी.सी.सी.आई. के मौजूदा अध्यक्ष एन.श्रीनिवासन 2014 के मध्य से आई.सी.सी.बोर्ड के अध्यक्ष होंगे।

श्रीनिवासन के भाई बने ओलम्पिक संघ के अध्यक्ष- अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति से 14 माह से निलम्बित चल रहे भारतीय ओलंम्पिक संघ ने एक बार फिर खुद को जीवित कर लिया है। संघ के चुनाव में बेदाग छवि के सदस्यों का चुनाव किया गया, जिसमें बी.सी.सी.आई और आई.सी.सी. के बॉस श्रीनिवासन के भाई एन.रामचन्द्रन को अध्यक्ष बनाया गया है। इन चुनावों से सन्तुष्ट होकर आई.ओ.सी. ने

आई.ओ.ए. पर से निलम्बन हटा दिया है और भारत की करीब 14 महीने बाद ओलम्पिक में वापसी हो गयी है।

भारतवंशी प्रोफेसर को टेक्नोलॉजी का नोबेल- भारतीय मूल के प्रोफेसर आरोग्य स्वामी जोसेफ पॉलराज को टेक्नोलॉजी का नोबेल यानी मारकोनी पुरस्कार मिला है। उन्होंने इण्टरनेट की मीमो टेक्नोलॉजी पर शोध किये हैं।

प्लास्टिक के नोट इसी वर्ष से - इस वर्ष जुलाई के बाद से बाजार में दस रुपये के प्लास्टिक के नोट बाजार में उपलब्ध होंगे। वित्त राज्य मन्त्री नमो नारायण मीणा ने लोकसभा में बताया कि फिलहाल चुनिन्दा पाँच शहरों में 10 रुपये मूल्य के एक अरब प्लास्टिक के नोट चलाये जायेंगे।

महारानी के गले में निजाम का हार - ब्रिटिश राजकुमार प्रिंस विलियम की पत्नी कैट मिडल्टन लन्दन में आयोजित नेशनल पोर्टेट गैलरी में पहुँची, तब उनके गले में हीरों का ऐसा हार था, जिसकी कीमत अब तक आँकी नहीं जा सकी। ये 38 हीरों का हार हैदराबाद के निजाम ने महारानी एलिजाबैथ द्वितीय को उनकी शादी पर 1947 में तोहफे में दिया था।

बिहार में 20 कि.मी. के क्षेत्र में इण्टरनेट फ्री - बिहार में पटना से लेकर दानापुर तक का 20 कि.मी. का क्षेत्र पूरी तरह इण्टरनेट फ्री यानी वाई-फाई बना दिया गया है। इतना बड़ा वाई-फाई जोन अब तक दुनिया में कहीं नहीं है।

दिल्ली मेट्रो को मिला यू.एन.अवॉर्ड - कार्बन उत्सर्जन कटौती के लिए दिल्ली मेट्रो रेल कार्पोरेशन (डी.एम.आर.सी.) गोल्ड स्टेण्डर्ड फाउण्डेशन का प्रमाण-पत्र हासिल करने वाली दुनिया की सबसे पहली रेल प्रणाली बन गयी। 51 स्टेशनों पर ऊर्जा के बचत के लिए अपनाये गये कदमों के कारण यह प्रमाण-पत्र दिया गया है।

आई.पी.एल.-7 के सबसे मँहगे खिलाड़ी बने युवराज - भारत के हरफनमौला खिलाड़ी युवराजसिंह को रॉयल चैलेन्जर्स बैंगलूर ने इण्डियन प्रीमियर लीग (आई.पी.एल.) के सातवें संस्करण की नीलामी प्रक्रिया में 14 करोड़ रुपये में खरीदा।

सेहत का खजाना-लहसुन - लहसुन सेहत के लिहाज से काफी गुणकारी है, इसमें विटामिन ए, बी, सी एवं सल्फ्यूरिक एसिड विशेष मात्रा में पाया जाता है। लौह तत्त्व होने से यह रक्त-निर्माण में सहायक होता है। विटामिन सी होने से स्कर्वी रोग से बचाता है। यह कोलेस्ट्रोल को कम करता है। ब्लडप्रेशर को नियन्त्रित रखने के लिए साथ ही दिल की बीमारियों से भी हमारी हिफाजत करता है।

पैदल चलने से होती हैं कम बीमारियाँ - लन्दन के इम्पीरियल कॉलेज और पब्लिक हैल्थ फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया के शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन के नतीजों के आधार पर कहा है कि जो भारतीय पैदल चलकर या साइकिल चलाकर काम पर जाते हैं, उनमें दिल की बीमारियों का खतरा काफी कम होता है। इसकी मुख्य वजह है कि पैदल चलने या साइकिल चलाने से उनमें मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप की आशंका काफी कम हो जाती है।

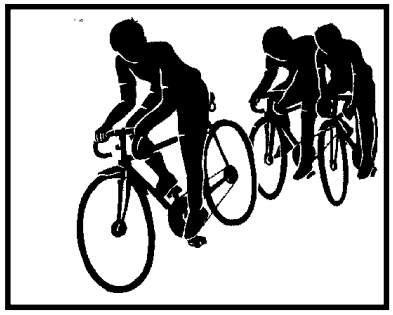

बीमार हैं, तो डॉयल करें 104 टोल फ्री नम्बर, मिलेगा मुफ्त उपचार - अगर आप बीमार हैं और डॉक्टर के पास नहीं जा सकते हैं, तो 104 नम्बर पर कॉल करें। आपको फोन पर ही सुपर स्पेशिएलिटी चिकित्सकीय परामर्श मिल जायेगा। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ने टेलीमेडिसन योजना के तहत टोल फ्री नम्बर 104 शुरू किया है। इस नम्बर पर मरीजों को मुफ्त चिकित्सकीय परामर्श दिया जायेगा।

ज्यादा मोबाइल इस्तेमाल से उच्च रक्तचाप का खतरा - सैन फ्रांसिस्को में अमेरिकन सोसायटी ऑफ हाइपरटेंशन के अध्ययन के मुताबिक मोबाइल फोन के अधिक इस्तेमाल से सिस्टोलिक ब्लडप्रेशर बढ़ सकता है, जिससे अन्ततः हृदय रोग का खतरा भी बढ़ सकता है।

संकलन - **सुनील भावसार** (उ.श्रे.शि.)

Ability is a poor man's wealth. - M. Wren

सम्पादकीय

प्रिय विद्यार्थियो,

आप सभी का परीक्षा-परिणाम आपके सामने है। सभी सफल विद्यार्थियों को मेरी ओर से बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ! परीक्षा-परिणाम आशा के अनुरूप होगा, ऐसी मैं कामना करता हूँ, क्योंकि स्वाभाविक-सी बात है, जैसा प्रयास हम करते हैं, वैसे ही परिणाम हमारे सामने होते हैं। हमारे प्रयासों में कमी ही हमारी असफलता का सूचक है। इसलिए असफल विद्यार्थी प्रयास जारी रखें, सफलता उनकी राह निहार रही है।

आप पढ़-लिखकर राष्ट्र का गौरव बनें, ऐसी मैं कामना करता हूँ, परन्तु एक अच्छे नागरिक बनें, ऐसी मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ। मैं अभिभावकों को भी उनके बच्चों के परिणाम हेतु सफलताएँ प्रेषित करता हूँ, क्योंकि जिस प्रकार इमारत को खड़ा करने में नींव की मजबूती का ध्यान रखा जाता है, ठीक उसी प्रकार बच्चे की सफलता या असफलता में उनके अभिभावकों की दृष्टि सार्थकता से रही है। वास्तविकता यही है कि माता-पिता बच्चे के प्रथम गुरु होते हैं। 5 वर्ष की उम्र में बच्चा इतना कुछ सीख जाता है, जितना चार वर्ष आगे स्कूल में नहीं सीख सकेगा। इसलिए बच्चों के जीवन-निर्माण को सार्थकता देना एक बहुत बड़ा अभ्यास है। परियों की कहानी तो सभी की माँ सुनाती हैं, परन्तु जीजाबाई, रामायण एवं महाभारत की कहानी अपने बच्चे को सुनाती हैं, तो शिवाजी जैसे शूरवीर पैदा होते हैं। बच्चे बचपन में अपने माता-पिता से जो कहानियों में सुनते हैं, उसे बड़े होकर वास्तविकता से जोड़ते हैं और फिर एक श्रृंखलाबद्ध ज्ञान का विकास होता है और वही बच्चा इतिहास, भूगोल, विज्ञान व गणित-प्रेमी बनकर एक अलग पहचान कायम करता है, तभी तो मोहनदास की माँ उपवास रखकर, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को उपवास का महत्त्व बताती है।

आज बच्चों में शैक्षिक उत्थान है, परन्तु नैतिकता की कमी है, जिसकी आज महती आवश्यकता है। लोग जिन्दगी-भर कारोबार करते हैं, पैसा इकट्ठा करते हैं। सम्पत्ति जुटाते हैं, ताकि वे अपने बच्चों को संसाधन दे सकें, ताकि उनके बच्चों का जीवन सुखी बन सके। एक हद तक यह ठीक भी है, परन्तु क्या सम्पत्ति रखने वाले सभी व्यक्ति सुखी हैं। इस बात की क्या गारण्टी कि आपके द्वारा जोड़ा गया धन वह सही तरह से व्यय करेगा। इसलिए धन से कहीं ज्यादा जरूरी है, अच्छे संस्कार, अच्छा नैतिक आचरण, क्योंकि संस्कारों के अभाव में बच्चे को सौंपा गया धन पागल के हाथों में दी गयी तलवार के समान है, जिससे वह खुद भी परेशान होगा और समाज को भी आहत करेगा।

इसलिए यदि बच्चे असफल होते हैं, तो उसकी असफलता का पूरा उत्तरदायित्व उसी का नहीं है। उसका कुछ-न-कुछ उत्तरदायी हमें अपने-आपको मानना पड़ेगा। बच्चों की समस्याओं को समझकर उचित निराकरण करना होगा, क्योंकि आपका बच्चा देश का एक नागरिक भी है। इसलिए अच्छे राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए अपने बच्चों को संस्कारी, जिम्मेदार व अनुशासित नागरिक बनाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आप मेरी बात से सहमत होंगे। ऐसी आकांक्षा के साथ -

शुभाकांक्षी
सन्दीप रावत
सम्पादक

स्कूल-इन्फो

नवांकुर की छात्रा ने प्रदेश में पहली रैंक प्राप्त की

नगर गंजबासौदा के लिए यह बड़े गौरव और हर्ष का विषय है कि भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मन्त्रालय बायोटेक्नोलॉजी विभाग द्वारा नवांकुर की छात्रा कु. वैशाली दांगी पुत्री श्री भगवत सिंह दाँगी का चयन Department of Biotechnology (DBT) स्कॉलरशिप–2012 के लिए किया गया है। कु. वैशाली दाँगी ने बायोलॉजी बायोटेक्नोलॉजी इन 10+2 एक्जामिनेशन में भाग लेकर देश के कुल चयनित 100 छात्रों में से मध्यप्रदेश में प्रथम रैंक हासिल की है। इस स्कॉलरशिप के रूप में कु. वैशाली दाँगी को 20,000 रुपये की राशि, गोल्ड मेडल तथा प्रमाण–पत्र प्रदान किया जायेगा।

उल्लेखनीय है कि इस स्कॉलरशिप के लिए पूरे देश में से 100 छात्र/छात्राओं का चयन राष्ट्रीय स्तर पर किया गया है, जिनमें से CBSE के 44 टॉपर्स स्टूडेण्ट्स, CISCE के 4 टॉपर्स स्टूडेण्ट्स तथा 52 स्टूडेण्ट्स भारत के 26 राज्यों के बोर्ड से सम्बन्धित हैं। प्रत्येक राज्य से 2 छात्रों का चयन इस स्कॉलरशिप के लिए किया गया है। मध्यप्रदेश में कु. वैशाली दाँगी ने प्रथम रैंक हासिल करके इस स्कॉलरशिप की पात्रता प्राप्त की है। कु. वैशाली दाँगी वर्तमान में पीपुल्स मेडिकल कॉलेज से MBBS में अध्ययनरत् हैं।

वैशाली दाँगी की इस उपलब्धि पर विद्यालय में हर्ष व्याप्त है। विद्यालय–परिवार ने छात्रा के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उसके और उसके परिवार को बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं।

अभाविप द्वारा आयोजित सामान्य-ज्ञान प्रतियोगिता में नवांकुर के छात्रों का परचम लहराया

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् द्वारा तहसील स्तर पर आयोजित की गयी स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर आधारित सामान्य ज्ञान–प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कार–वितरण–समारोह दिनांक 25.3.14 को पंचवटी भवन में किया गया, जिसमें अनेक छात्र–छात्राएँ, शिक्षक एवं अभिभावक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में विहिप के क्षेत्रीय मन्त्री श्री राजेश तिवारी, विशेष अतिथि श्री देवेन्द्र वर्मा, मुख्य वक्ता श्रीमती रीता भावसार उपस्थित रहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी श्री कान्तीभाई शाह ने की। नवांकुर विद्यालय के आचार्य श्री सन्दीप रावत व सुनील भावसार भी इस दौरान कार्यक्रम स्थल पर मौजूद रहे।

प्रतियोगिता में तहसील–स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले करीब 500 छात्रों को मेडल एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किये गये। इस प्रतियोगिता में नवांकुर विद्यापीठ की छात्रा कु. पूजा लोधी, कक्षा 10 ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्हें परिषद द्वारा 5001/– रुपये का नकद पुरस्कार एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

द्वितीय स्थान पर नवांकुर की रिचा लोधी तथा रोली समैया ने, तृतीय स्थान नवांकुर की छात्रा मीनू चौकसे, चंचल भारद्वाज और कनिका तिवारी ने चतुर्थ स्थान अनिकेश, तरुण, सोनाली व साक्षी ने तथा पंचम स्थान शिवानी, पूजा, आकाश, अजय व सजल व्यास ने प्राप्त किया।

उल्लेखनीय है कि इस प्रतियोगिता में कुल 7500 विद्यार्थियों ने भाग लिया था, जिनमें लगभग 650 विद्यार्थी नवांकुर विद्यापीठ के थे।

विद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम स्थान प्राप्त करने पर विद्यालय में हर्ष व उत्साह व्याप्त है। विद्यालय–परिवार ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि के छात्र–छात्राओं को बधाई दी है।

माह अप्रैल-मई में जन्मदिन वाले सभी विद्यार्थियों को नवांकुर-परिवार का शुभाशीष!

अमृत–महोत्सव में नवांकुर के शिक्षक हुए सम्मानित

विदिशा के गौरव सार्वजनिक वाचनालय एवं पुस्तकालय द्वारा अपनी स्थापना के हीरक–जयन्ती–वर्ष को **अमृत– महोत्सव** के रूप में मनाया गया, जिसके अन्तर्गत नगर के पाठकों, छात्रों, शिक्षकों एवं प्रबुद्ध वर्ग हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएँ एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। नवांकुर विद्यापीठ के छात्रों एवं शिक्षकों ने भी इन कार्यक्रमों में भाग लेकर अमृत–महोत्सव में सहभागिता की।

वाचनालय समिति द्वारा संस्था के शिक्षकों को सम्मान–पत्र एवं पुस्तकें प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त करने वाले शिक्षकगण में श्री सन्दीप रावत, शम्भूसिंह रघुवंशी, श्रीमती रेणु श्रीवास्तव, सुनील भावसार, पूर्व शिक्षकगण – कु. अफसाना शेख, पारुल जैन, योगेश चतुर्वेदी एवं राजीव जैन के नाम शामिल हैं। ■

कैरियर

इंग्लिश सीखने का सरल उपाय

आप हिन्दी या अपनी मातृभाषा तो धाराप्रवाह से बोल लेते हैं, परन्तु इंग्लिश बोलने या समझने में आपको दिक्कत आती है। ऐसी स्थिति में आप एक कॉम्पलैक्स का शिकार हो जाते हैं। इसके लिए क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान देने की कोशिश की है कि कोई भाषा सीखने में जहाँ आपको दूसरे के द्वारा बोला या लिखा हुआ ठीक-ठाक समझ में आना चाहिए, वहीं इण्टरप्रिटेशन भी ठीक से आनी चाहिए अर्थात् उसी भाषा की पूरी समझ एवं अभिव्यक्ति दोनों ही जरुरी होते हैं।

यदि हम अपनी मातृभाषा की सीख पर ध्यान दें, तो पता चलेगा कि हमने उसे अपनी फैमिली और आस-पास के लोगों से दिन-रात सुनने और निरन्तर बोलते हुए सीखा है। इस भाषा के लिए पैरेन्ट्स न कोई क्लास लगवाते हैं और न ही कोई टीचर रखते हैं, इसी तरह इंग्लिश भी सीखी जा सकती है।

भाषा बोलने का माहौल - इंग्लिश चूँकि हमारे यहाँ आम भाषा नहीं है, तो उसके लिए हमें मातृभाषा बोलने की तरह का माहौल भी नहीं मिल सकता, परन्तु बहुत कुछ वैसा ही बनाया जा सकता है। जब भी आप टी.वी. देखें, तो उसमें अंग्रेजी कार्यक्रम देखें। भले ही आप उसे पूरी तरह न समझ पायें, परन्तु बार-बार सुनने से आप इसे काफी हद तक समझने लगेंगे। इसी तरह रेडियो पर भी इंग्लिश न्यूज और अन्य कार्यक्रम सुनते रहें। याद रखें भाषा सीखने का पहल कदम सुनते रहने से ही शुरू होता है। हिन्दी न्यूज के ठीक बाद यदि इंग्लिश न्यूज भी टी.वी. पर उन्हीं दृश्यों के साथ देखी जाये, तो निश्चित रूप से आपकी इंग्लिश की समझ एवं पकड़ लगातार बढ़ती जायेगी।

बोलने की प्रेक्टिस - सुने हुए छोटे-छोटे वाक्य या तो नोट कर लीजिए या जो याद रह जायें, उन्हें बार-बार दोहरयें तथा बातचीत में उन्हें इस्तेमाल करें। याद रखें, इंग्लिश भी अन्य भाषाओं की तरह पहले बोलनी सीखनी चाहिए तथा लिखने एवं पढ़ने की प्रेक्टिस बाद में करनी चाहिए। अपने भाइयों-बहिनों और फ्रैण्ड सर्किल में डिस्कशन करते हुए इसे बोलने का अभ्यास करें। बोलने में थोड़ी गलती हो भी जाये तो उसकी परवाह न करें, क्योंकि मातृभाषा सीखते समय भी हमारे बच्चे गलती करके सीखते हैं। यदि ठीक बोलने में घर के किसी बड़े या इंग्लिश ट्यूटर की मदद मिल सकती हो, तो जहाँ बोलना जल्दी आयेगा, वहीं गलतियाँ भी कम होती जायेंगी।

शब्द ज्ञान बढ़ायें - भले ही भाषा की नींव शब्दों के साथ-साथ वाक्य पर हो, परन्तु वाक्य बनते तो शब्दों के संयोग से ही है, इसलिए लगातार नये शब्दों को वाक्यों एवं सही रिफ्रेंस में सीखते रहें। किसी शब्द की केवल सही स्पेलिंग और उसका अर्थ याद कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। उसे सही जगह इस्तेमाल करना भी आना चाहिए। इसके लिए एक शब्दकोष (डिक्शनरी) भी आपके पास होनी चाहिए, जिससे मीनिंग निकाल कर आप याद कर सकें। शब्दों के अर्थ भी सन्दर्भ से जुड़कर बदलते रहते हैं, इसलिए उन्हें वाक्यों में प्रयोग करना सीखें तथा सही परिस्थिति में उन्हें इस्तेमाल करें। जितना आपका शब्द ज्ञान बढ़ेगा, उतना ही आप उसमें परफैक्ट होते जायेगें। इसके अलावा, जब भी कोई नया शब्द पढ़ने या सुनने को मिले तो उसे नोट कर लें, इससे आपका निजी शब्द भण्डार भी बढ़ता जायेगा।

ग्रामर सीखें - पहले ग्रामर पढ़कर और सीखकर ही लैंग्वेज सीखी जाती हो, ऐसा नहीं है। हमने अपनी मातृभाषा भी बिना ग्रामर पढ़े और समझे बिना केवल बोलने की प्रेक्टिस करके ही सीखी थी। ग्रामर भले ही सीधे इंग्लिश की प्रेक्टिस नहीं कराती, पर वह सही ढंग से उसे सीखने में सहायक होती है तथा आमतौर पर भाषा में होने वाली गलतियों को भी वह दूर करती है। अतः, बोलने की प्रेक्टिस करते हुए ग्रामर का सहारा लें।

संकलित-**ओ.पी.श्रीवास्तव**
आचार्य-नवांकुर विद्यापीठ

An intelligent person not only knows how to take advice but also how to reject it.

स्वास्थ्य

दिमागी उलझन तो नहीं नेल बाइटिंग

कभी मजाक में, तो कभी अदा से दाँतों के बीच रख काटे गये नाखून किसी कहानी के कैरेक्टर पर टेम्परेरी भले ही सूट करें, लेकिन ये शरीर और दिमाग दोनों की तकलीफ को दर्शाते हैं। नेल बाइटिंग अगर बच्चों के लिए अच्छी नहीं, तो बड़ो के लिए भी ये खतरे की घण्टी है।

लगातार नाखून कुतरना किसी दिमागी परेशानी का भी संकेत हो सकता है।

इस आदत के शिकार लोग लगातार अपने मुँह से हाथ की उंगलियों के नाखून कुतरते रहते हैं और कई बार तो वे नाखून खा भी जाते हैं। यही नहीं वे नाखून के साथ-साथ क्यूटिकल्स भी कुतर डालते हैं। यह पूरी स्थिति ओनिकोफेजिया कहलाती है।

इससे नाखूनों की सेहत के साथ ही पूरे शरीर के स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक असर पड़ सकता है।

आँकड़े बताते हैं कि 7-10 साल के उम्र के लगभग 30 प्रतिशत बच्चे और लगभग 45 प्रतिशत टीनएजर्स इस आदत के शिकार होते हैं।

किसी कार्यक्रम के समय, तो कभी किसी महत्त्वपूर्ण स्थान पर, कभी घर के सोफे पर यूँ ही टी.वी. देखते हुए तो कभी क्लासरूम में पढ़ते हुए..... नेल बाइटिंग की आदत किसी उम्र के व्यक्ति में देखी जा सकती है। इस आदत को इम्पल्स कण्ट्रोल डिसऑर्डर के रूप में भी देखा जाता है। क्या हम कभी ये जानने की कोशिश भी करते हैं कि बच्चा या कोई बड़ा भी ऐसा किस कारण से कर रहा है? आमतौर पर हम इस बात पर उतना ध्यान नहीं देते, लेकिन बच्चों और बड़ों में नेल बाइटिंग की ये आदत उनके दिमाग में चल रही उथल-पुथल की ओर भी इशारा करती है। ऐसे बच्चे या बड़े तनाव, एंग्जाएटी, डिप्रेशन, नर्वसनेस, आदि से गुजर रहे होते हैं या फिर किसी चीज से उन्हें परेशानी हो रही होती है। तो अपनी इस स्थिति को वे नाखून कुतरकर आरामदायक बनाना चाहते हैं और धीरे-धीरे यह आदत बन जाती है। इसके अलावा, बोर होने या अति उत्साहित होने पर भी वे ऐसा कर सकते हैं। यानी इस आदत के पीछे और भी कई सारे कारण हो सकते हैं।

शरीर पर पड़ता दुष्प्रभाव -

जाहिर है कि दाँतों से लगातार कुतरे जा रहे नाखून न केवल आपकी त्वचा, बल्कि दाँत, जुबान और बाकी शरीर पर असर डालते हैं। इस आदत के कारण नाखूनों के आस-पास की क्यूटिकल्स तथा चमड़ी के कटने-फटने की स्थिति पनप जाती है और इसमें माइक्रोबैक्टीरियल और वायरल इंफेक्शन को आसानी से हमला करने को जगह मिल जाती है। नाखूनों में साफ-सफाई की कमी से पेट और मुँह में संक्रमण भी हो सकते हैं।

तो क्या उपाय करें -

इस आदत के लिए अधिकांशत: नाखूनों पर कोई कड़वी दवा या चीज लगाकर आदत पर लगाम लगाने की कोशिश की जाती है। साथ ही इस आदत को छुड़ाने के लिए दिमाग को कहीं और लगाने पर ध्यान दिया जा सकता है, आप अपने मुँह में सौंफ आदि रखकर उसे बिजी रख सकते हैं, बार-बार टोककर भी यह आदत छुड़वाई जा सकती है। वैसे ज्यादातर मामलों में यह आदत सामान्य तरीके से ही छुड़वायी जा सकती है, लेकिन यदि यह गम्भीर रूप ले ले, तो चिकित्सकीय सलाह से इसका उपाय करें।

(संकलित-नवदुनिया सेहत)

अतिथि की कलम

शिखर के दोहे

समता भाव विवेक जो, धारण करता नेक।
विनय भाव भी हो 'शिखर', बिन पर उड़े स्वमेव।।

करें क्रोध और ईर्ष्या, हो न विनय विवेक।
ईंधन अगनी बिन 'शिखर', जल जाये स्वमेव।।

वाणी से मीठी नहीं, कोई जग में होय।
यह ऐसी औषधि 'शिखर', रोग कभी न होय।।

तर्क-वितर्क करो नहीं, मन को लो समझाय।
बोलचाल रखियो 'शिखर', पुनः बात बन जाये।।

सकारात्मक सोच को, दीजे सदा बढ़ाय।
पीछे की भूलो 'शिखर', आगे की चित लाय।।

चिंता नहीं चिन्ता बड़ी, कह गये पहले लोग।
चिन्ता से क्या हो 'शिखर', कर्मों का फल भोग।।

जितना जिसके भाग्य में, उतना पैदा होय।
वर्षा या सूखा 'शिखर', बन जाते हैं योग।।

सुख-दुःख छाया धूप है, 'शिखर' सदा न होय।
घटे-बढ़े होवे रवतम, छुपत प्रकाशक दोय।।

बाँटे से बढ़ जात है, घटत छुपाये जान।
ज्ञान निधी ऐसी 'शिखर', मिले उच्च स्थान।।
बहता पानी शुद्ध है, थमत अशुद्धि होय।
आये-जाये दौलत 'शिखर', सुख का कारण होय।।

रचनाकार-
शिखरचन्द्र जैन 'शिखर'

शिक्षक की कलम

मैं कौन हूँ

सम्पूर्ण जगत मेरा कर्मक्षेत्र है। मैं स्वतन्त्र हूँ, क्योंकि मैं अपनी इच्छा के अनुरूप कार्य कर सकती हूँ। मैं केवल कहती ही नहीं, करती भी हूँ। सब कुछ करके भी मैं अहंकार नहीं करती। मेरा कर्मक्षेत्र बहुत बड़ा है। वह घर के बाहर और अन्दर दोनों जगह है। घर में मेरी बराबरी की समझ रखने वाला कोई है ही नहीं। संसार में मुझसे बड़ा और कौन है, मैं तो किसी को भी नहीं देखती हूँ और जगत में मुझसे बढ़कर छोटा भी कौन है, उसे भी तो खोज नहीं पाती।

मैं पढ़ती हूँ सन्तान को शिक्षा देने के लिए। मेरा ज्ञान मानव जीवन में विवेक का प्रकाश फैलाने के लिए है। मैं गाना बजाना सीखती हूँ। केवल सभी के हृदय को कोमल बनाने तथा सोयी हुई संवेदना जगाने के लिए। मैं सीखती हूँ, सिखाने के लिए। शिक्षा के क्षेत्र में मेरा जन्मगत अधिकार है।

मैं दूसरी भाषा सीखती हूँ, परन्तु बोलती हूँ अपनी ही भाषा और मेरी सन्तान इसलिए उसे गौरव के साथ मातृभाषा कहती है।

क्या मुझे पहचान लिया है? नहीं पहचाना, तो फिर लो, मैं नारी हूँ।

– **श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव,** उच्च श्रेणी शिक्षिका

लघुकथा-गिद्ध

गिद्ध कई दिनों से भूख से बदहाल थे। कहीं कोई लावारिस लाश नहीं। काफी खोजबीन के बाद भोजन की जुगाड़ न होने पर गिद्धों की सभा हुई। अगर इसी प्रकार चलता रहा, तो हम लोग जल्दी ही भूख से तड़प-तड़प कर मर जायेंगे। एक गिद्ध ने थकी-थकी आवाज में कहा। सब युक्ति निकालने लगे। आखिरकार गिद्ध रात में छिपते-छिपते गये और शहर की बस्तियों में जगह-जगह लगी मूर्तियों को अपनी चोंच और पंजों से खण्डित कर दिया। सुबह होते ही दो समुदायों में जमकर घमासान हुआ। कई लाशें गिरीं-गिद्ध खुश हुए। गिद्ध जमकर जीमे। गिद्ध अब कभी भूखे नहीं रहते, उन्हें समाधान मिल गया है।

– **विनय सोनी**
कक्षा 11 गणित

Kindness is a language the dumb can speak and the deaf can hear and understand.

विज्ञान की जानकारी

1. मतदाताओं के हाथ में लगायी जाने वाली स्याही – सिल्वर नाइट्रेट,
2 प्रयोगशाला में बनने वाला पहला तत्त्व – यूरिया,
3 अन्तरिक्ष में जाने वाला प्रथम व्यक्ति – यूरी गागरिन,
4 चन्द्रमा पर उतरने वाला प्रथम व्यक्ति – नील ऑर्मस्ट्राँग,
5. सबसे बड़ी हड्डी मानव शरीर में – फीमर (जाँघ की),
6. सबसे छोटी हड्डी मानव शरीर में – स्टेपिज (कान की),
7. संसार का सबसे बड़ा पुष्प – रेफ्लेसीया,
8. टायफाइड से शरीर का कौन-सा अंग प्रभावित होता है – आँत,
9. पानी में हवा का बुलबुला होता है – अवतल लैंस,
10. विषुवत् रेखा पर किसी वस्तु का भार होगा – न्यूनतम,
11. इन्द्रधनुष बनने का कारण है – अपवर्तन,
12 यदि हम चन्द्रमा पर से आकाश देखें, तो कैसा दिखायी देगा – काला,
13 प्याज व लहसुन में गन्ध होती है – पोटेशियम के कारण,
14 कच्चे फलों को पकाने में काम आता है – एसिटिलीन,
15 चींटी, मधुमक्खी, बिच्छू आदि के काटने से जलन व खुजली होने का कारण है – फार्मिक एसिड,
16 कृत्रिम वर्षा होती है – सिल्वर आयोडाइड के कारण,
17 साल्क टीका किस रोग में लगाया जाता है – पीलिया,
18 पीलिया से शरीर को कौन-सा अंग प्रभावित होता है – यकृत,
19 सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर कितने समय में आता है – लगभग 8 मिनिट में,
20 पीयूष-ग्रन्थि कहाँ होती है – मस्तिष्क में,
21 हमें थकान लगती है – लैक्टिक अम्ल के कारण,
22 सेब में होता है – मैलिक एसिड,
23 अंगूर में होता है – टार्टरिक एसिड,
24 निकट-दृष्टि-दोष में प्रयुक्त होने वाला लैंस – अवतल लैंस,
25 दूर-दृष्टि-दोष में प्रयुक्त होने वाला लैंस – उत्तल लैंस,
26 हँसाने वाली गैस नाइट्रस ऑक्साइड के खोजकर्ता – प्रीस्टले,
27 नेत्रदान में नेत्र के किस भाग का दान किया जाता है – कॉर्निया का,
28 गोताखोर पानी के अन्दर साँस लेने के लिए कौन-सी गैसों का मिश्रण ले जाते हैं – ऑक्सीजन और हीलियम गैस का।

- **अनिलकुमार कुशवाह**
यूडीटी-गणित

बच्चों की कलम

विद्यालय के सुनहरे पल

किसी ने सही कहा है कि जिन्दगी एक अजीब पहेली है, जो कभी हँसाती है और कभी रुलाती है। जैसे, जब हम बचपन में स्कूल में नये-नये भर्ती होते हैं, बहाने बनाते हैं, मगर जैसे-जैसे बड़े होते हैं, हम स्वयं स्कूल में जाने के लिए तत्पर हो जाते हैं, स्कूल हमें हँसना सिखा देते हैं और आज ..... जब स्कूल छोड़ने की बारी आ रही है, तो फिर रोना आ रहा है।

बचपन की वे सुनहरी यादें, जिनके बारे में सोचकर मन को एक असीम सुख की प्राप्ति होती है, लेकिन अब उन सुनहरी यादों से जुड़ी तमाम व्यवस्था से विदा लेने का समय भी आ गया है।

पिछले 14 वर्षों में स्कूल में पढ़ते हुए जो कुछ सीखा और अनुभव मिला, वह आने वाली जिन्दगी के लिए प्रेरणा-स्रोत है। एक तरफ तो खुशी हो रही है कि अब मैं नये क्षेत्र में, नये जीवन की शुरूआत करने जा रही हूँ और एक तरफ दु:ख भी हो रहा है कि न चाहते हुए भी सबसे बिछुड़ना पड़ रहा है।

स्कूल से विदा होते-होते, अब स्कूल की दिनचर्या याद आ रही है कि कैसे हम स्कूल के लिए जल्दी उठते थे, कैसे जल्दी-जल्दी स्कूल आते थे और कभी अगर स्कूल का कार्य नहीं करते थे, तो शिक्षक का चेहरा सामने आ जाता था।

स्कूल में पहले हम अकेले होते हैं, फिर साथी बनते हैं और अब पूरा स्कूल एक परिवार लगता है। इसलिए अब लगता है कि शिक्षकगण का आशीर्वाद, सहपाठियों के साथ गुजारे क्षण, स्कूल छोड़ने के बाद शायद ही अकेलेपन का एहसास होने देंगे। ऐसा लगता है कि -

अकेले आये थे, मंजिल की तलाश में,
मगर लोग मिलते गये, कारवाँ बनता गया।

स्कूल में होने वाली वाद-विवाद, भाषण-प्रतियोगिताएँ, वार्षिक खेलकूद-उत्सव की अब मधुर यादें रह जायेंगी। जिन्दगी का एक अध्याय तो समापन पर है और दूसरा अध्याय शुरू होने वाला है।

उजाले अपनी यादों के, तू अपने साथ रहने दे।
न जाने किस गली में, जिन्दगी की शाम हो जाये।।

स्कूल में मुझे जो प्यार-दुलार अपनापन और शिक्षण मिला, उसे मैं कभी नहीं भूल पाऊँगी, क्योंकि मैं जानती हूँ कि इस जनम में फिर कभी स्कूल में बिताये दिन आने वाले नहीं हैं। यह नवांकुर विद्यालय मेरे और अन्य सहपाठियों के लिए केवल ज्ञान का माध्यम नहीं रहा है। यह तो एक ऐसी संस्था है, जिसने हम सभी को उन्नति की ओर अग्रसर किया। इस विद्यालय ने मुझे माँ जैसी ममता और पिता जैसा प्यार दिया, मेरी खुशी में ही नहीं, अपितु दु:खों में भी शरीक हुआ है। अब यह मेरा अन्तिम वर्ष है, मैं स्कूल में बिताये एक-एक पल को याद करती हूँ, तो इसके अगाध प्रेम के कारण आँसू छलक पड़ते हैं। यह स्कूल मेरे लिए अविस्मरणीय है और रहेगा। इतने बड़े परिवार (विद्यालय) से बिछुड़ने दु:ख तो हम 12वीं कक्षा के छात्र-छात्राएँ ही जानते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि जो डाँट-फटकार, प्यार, ज्ञान हमें अपने शिक्षकों से मिला है, वह निश्छल, प्यार-फटकार अब शायद ही मिले।

हम कक्षा 12वीं के छात्र-छात्राएँ स्कूल की पढ़ाई पूरी करके इस कभी न भूलने वाले विद्यालय से चले जायेंगे- जहाँ हमारा एक तरह से बचपन बीता है। जिस भूमि पर हमें अक्षर-ज्ञान प्राप्त हुआ है, ऐसी भूमि को, इस विद्यालय को शत्-शत् नमन!

-कु. रानू गुर्जर
कक्षा 12 गणित

करें पढ़ाई पायें ज्ञान

हमें ज्ञान दो हे भगवान।
प्रतिदिन करें तुम्हारा ध्यान।।
कभी न हो मन में अभिमान।
हमसे सबका हो कल्याण।।
माता और पिता का मान।
गंगा गीता का सम्मान।।
सदा रहे सेवा का ध्यान।
भारत माँ का मान महान।।
गायें मिलकर सबके गान।
हम गणेश-से बनें सुजान।।
करें पढ़ाई पायें ज्ञान।
देश-धर्म पर जायें प्राण।।

- सुषमा रघुवंशी, कक्षा-5

बोलो जय-जय भारती

एक हाथ में दीपक लेकर, एक हाथ में आरती।
अन्तर में ले प्यार विश्व का, बोलो जय-जय भारती।।
नहीं चाहिए मन्दिर-मस्जिद, गिरिजाघर के देवता।
धिक्कारो उस ताकत को, जो नहीं किसी को तारती।।
बोलो जय-जय भारती।।
कह दो हम गंगा के बेटे, ब्रह्मपुत्र के प्राण हैं।
रक्षा का हथियार हमारा, बाँसुरियों की तान है।।
हम उस माँ के लाल, जो जग पर तन-मन अपना वारती।
बोलो जय-जय भारती।।
हमने तो सिंगार किया है, अपना नित बलिदानों से।
गौरव पनपा नहीं हमारा, महलों से मयखानों से।।
हम उस वाणी के बन्दे, जो गिरते प्राण उबारती।
बोलो जय-जय भारती।।
हममें मानव की साँस का शाश्वत प्यार है।
हमें विश्व को कुछ कहने का इसलिए अधिकार है।।
हम उस वाणी के स्वर हैं जो विमल मन्त्र उच्चारती।
बोलो जय-जय भारती।।

– **कु. भक्ति विश्वकर्मा,**
कक्षा-2

बस एक सवाल

बस ! एक सवाल है आपसे,
मातृशक्ति अगर नहीं बची तो,
बाकी यहाँ रहेगा कौन ?
प्रसव वेदना, लालन-पालन,
सब दु:ख-दर्द सहेगा कौन ?
मानव हो तो दानवता त्यागो,
फिर ये उत्तर दो हमें...
एक नन्हीं-सी जान के कातिल को,
इंसान कहेगा कौन ?

– **कु. अक्षिता सक्सेना**
कक्षा-12 वाणिज्य

संस्कृति-प्रेम

एक विद्यालय में, जिसमें अधिकांश छात्र फैशनपरस्त दिखायी पड़ते थे, एक नये छात्र ने प्रवेश लिया। इस छात्र का परिधान धोती, कुर्ता व पेजी था। विद्यालय के छात्रों के लिए यह सर्वथा नया दृश्य था। कुछ उस पर हँसे और कुछ ने व्यंग्य किया, तुम कैसे छात्र हो, जो तुम्हें अप-टू-डेट रहना भी नहीं आता ? कम-से-कम अपना पहनावा तो ऐसा बनाओ, जिससे लोग इतना जान सकें कि तुम एक बड़े विद्यालय के छात्र हो।

नया छात्र हँसा और बोला-अगर फैशनेबल परिधान पहनने से ही व्यक्तित्व ऊपर उठ जाता है, तो टाई और सूट पहनने वाला हर अंग्रेज महान् विद्वान् होता। मुझे तो उनमें ऐसी कोई विशेषता दिखायी नहीं देती। रही शान घटने की बात, तो अगर सात समुद्र पार से आने वाले, ठण्डे मुल्क के अंग्रेज भारतवर्ष जैसे गर्म देश में भी केवल इसलिए अपना परिधान नहीं बदल सकते कि वह अपनी संस्कृति का अंग है, तो मैं भी अपनी संस्कृत को क्यों हेय होने दूँ ? मुझे अपने स्वयं के मान, प्रशंसा और प्रतिष्ठा से ज्यादा धर्म प्यारा है, संस्कृति प्यारी है। जिसे जो कहना हो कहे, मैं अपनी संस्कृति का परित्याग नहीं कर सकता। ये धर्मप्रिय, संस्कृति प्रिय छात्र थे **महान् देशभक्त गणेश शंकर विद्यार्थी**, जिन्होंने देश की स्वाधीनता हेतु अपने प्राणों का भी बलिदान दे दिया।

– **कु. शिल्पा जैन**, कक्षा-12 गणित

आधे-अधूरे और गलत ढंग से पेश किये गये सच से बचें

एक नाविक तीन साल से एक ही जहाज पर काम कर रहा था। एक रात वह नशे में धुत हो गया, ऐसा पहली बार हुआ था। कैप्टन ने इस घटना को रजिस्टर में इस तरह दर्ज किया, नाविक आज रात नशे में धुत था। नाविक ने यह बात पढ़ ली। वह जानता था कि इस एक वाक्य से उसकी नौकरी पर असर पड़ेगा, इसलिए वह कैप्टन के पास गया, माफी माँगी और कैप्टन से कहा कि उसने जो कुछ भी लिखा है, उसमें यह भी जोड़ दे कि ऐसा तीन साल में पहली बार हुआ है, क्योंकि पूरी सच्चाई यही है। कैप्टन ने मना कर

दिया और कहा, मैंने जो कुछ भी रजिस्टर में दर्ज किया है, वही असली सच है।

अगले दिन रजिस्टर भरने की बारी नाविक की थी। उसने लिखा, आज की रात कैप्टन ने शराब नहीं पी। कैप्टन ने इसे पढ़ा और नाविक से कहा कि इस वाक्य को वह या तो बदल दे अथवा पूरी बात लिखने के लिए आगे कुछ और लिख दे, क्योंकि जो लिखा गया था, उससे जाहिर होता था कि कैप्टन हर रात शराब पीता था। नाविक ने कैप्टन से कहा कि उसने जो कुछ भी लिखा है, वही सच है।

दोनों बातें सही थीं, लेकिन दोनों से जो सन्देश मिलता है वह एकदम भटकाने वाला है और उसमें सच्चाई की झलक नहीं है।

– **कु. निधि शर्मा**, कक्षा–12 गणित

सच्चा बालक

एक दिन गुरुजी ने अपनी कक्षा के बच्चों को गणित का एक प्रश्न घर से हल करके लाने को कहा। अगले दिन जब बच्चे शाला में पहुँचे, तो सबने अपना गणित का हल किया हुआ प्रश्न गुरुजी को दिखाया, परन्तु किसी का भी हल ठीक नहीं निकला।

जब सब बच्चे अपनी-अपनी कॉपी दिखा चुके, तब गोपाल ने अपनी कॉपी दिखायी प्रश्न का उत्तर ठीक था। गुरुजी प्रसन्न हो गये और गोपाल की प्रशंसा करने लगे। अपनी प्रशंसा सुनकर वह बालक फूट-फूटकर रोने लगा। वह सिसकियाँ भरते हुए कहने लगा - गुरुजी आप मेरी प्रशंसा कर रहे हैं, किन्तु यह प्रश्न मैंने अपने-आप हल नहीं किया। यह तो एक मित्र ने मुझे हल करके दिया है। मुझे अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर दुःख हो रहा है।

बड़ा होकर वह बालक गोपालकृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। देश को स्वतन्त्र कराने में गोखलेजी का बहुत बड़ा योगदान रहा।

- **शिवानी बघेल**
कक्षा 3

पान, तम्बाकू, गुटका खाने वालों के लिए ईनामी योजना

प्रथम पुरस्कार	–	कैंसर,
द्वितीय पुरस्कार	–	गले व पिचके हुए गाल,
तृतीय पुरस्कार	–	छोटा मुँह व बदबूदार साँसें,
चतुर्थ पुरस्कार	–	जवानी में बुढ़ापा,
पंचम पुरस्कार	–	गुर्दा खराब,
छठा पुरस्कार	–	खाँसी, कफ व दाँत खराब,
सातवाँ पुरस्कार	–	राम नाम सत्य है, (लकी बम्पर)

फॉर्म मिलने का स्थान – पान व किराने की दुकान,
प्रतियोगिता–शुल्क – 50 पैसे से 6 रुपये तक,
पुरस्कार स्थल – श्मशान घाट व कब्रिस्तान।

मुख्य अतिथि	–	यमराज
अध्यक्ष	–	हम
मन्त्री	–	आप

अतिशीघ्र ही उपर्युक्त स्कीम का लाभ उठायें। हर गुटके के साथ कमजोरी मुफ्त पायें।

– **साक्षी महलवार**
कक्षा 11 सी

आदमी नामा

जब जिन्दा था, तो किसी ने यह नहीं पूछा - खाना खाया या नहीं और जब मर गया, तो मेरे शोक में लाखों लोगों को खाना खिलाया जा रहा है।

जब मैं जिन्दा था, तो किसी ने यह नहीं पूछा तुम्हें सोने के लिए चादर दें या नहीं और जब मर गया, तो मेरे ऊपर नये-नये चादर उढ़ाये जा रहे हैं।

– **राशि रघुवंशी,** कक्षा–3

नारी बोझ नहीं, एक शक्ति

आसमान की एक बूँद बनकर,
जब मैं माँ की गोद में आयी थी,
तब माँ ने मेरी बड़े प्यार से,
एक स्वेटर बनायी थी।
और समाज ने मुझे मारने की,
बस एक रट लगायी थी,
तब माँ ही मेरी मुझे बचाने,
उनके बीच में आयी थी।
मुझको हमेशा रोका जाता,
मेरे विद्यालय जाने पर,
और रोक लगा दी जाती थी,
मेरे कपड़ों और विचारों पर।
तब मेरी परवाह सिर्फ, मेरी माँ को ही होती थी,
इसीलिए वह एक कोने में छिप–छिपकर रोती थी।
जब–जब इस समाज में मैंने अपना स्थान बनाना चाहा,
तब–तब इस दुनिया ने,
मुझे एक लड़की कहकर दबाना चाहा।
कहते थे कि तुम लड़की हो,
नहीं लड़ पाओगी इस समाज से।
मैंने कहा कि क्या मुश्किल है?
जब हिम्मत हो हम और आप में।
साथ लड़ेंगे मिलकर इस अत्याचारी समाज से।
और बुलन्द कर देंगे इस दुनिया को,
हमारी–तुम्हारी आवाज से।
फिर कोई लड़की, अब अनपढ़ न रह पायेगी।
इस नवनिर्मित समाज में,
उसकी गणना भी की जायेगी।

– कु. शैली दाँगी
कक्षा 12 गणित

भोजन करने के बाद ऐसा मत कीजिये

कुछ ऐसी एक्टीविटीज हैं, जो अक्सर कई लोग भोजन करने के तुरन्त बाद करते हैं, लेकिन इनसे सेहत को काफी नुकसान हो सकता है। अगर ये आदतें आपकी सूची में भी हों, तो इनसे दूर रहना बेहतर होगा।

1. धूम्रपान करना –

बहुत कम धूम्रपान करने वालों में भी सुबह- शाम भोजन के तुरन्त बाद सिगरेट–बीड़ी पीने की आदत होती है, जबकि सेहत विशेषज्ञों के मुताबिक ऐसा करना धूम्रपान के आम नुकसान की तुलना में 10 गुना ज्यादा हानिकारक साबित होता है।

2. फल खाना –

अक्सर भोजन करने के तुरन्त बाद लोग सेब, केला, अंगूर या अपना पसन्दीदा फल खाते हैं। हैल्थ एक्सपर्ट की राय में ऐसा करने से पेट में गैस बनती है और इससे पेट फूल जाता है। बेहतर होगा कि फल भोजन के एक घण्टे पहले या बाद में खाएँ।

3. चाय पीना –

भोजन करने के बाद चाय पीने से खाना हजम हो जाता है, ऐसा चाय के शौकीनों को भ्रम है। असलियत यह है कि चाय में अम्ल होता है, जो भोजन के प्रोटीन–कण्टेंट को कठोर कर देता है, जिससे भोजन को पचने में परेशानी होती है।

4. नहाना –

कई लोग खाने के बाद नहाते हैं और बिल्कुल फ्रेश होकर ऑफिस के लिए निकलते हैं या रात को भी खा–पीकर नहाते हैं, जबकि नहाने से हाथ–पैर और शरीर के अन्य हिस्सों में रक्त का प्रवाह बढ़ जाता है। इससे पाचन–तन्त्र कमजोर हो सकता है।

5. सोना–

अक्सर लोग देर रात भोजन करते हैं और तुरन्त लेटकर टी.वी. देखते–देखते नींद की आगोश में चले जाते हैं, लेकिन वैज्ञानिक कहते हैं कि यह आदत पाचन–तन्त्र की सबसे बड़ी दुश्मन है। इससे गैस्ट्रिक, एसिडिटी, हार्ट–बर्न और गले में जलने के अलावा आँतों में इन्फेक्शन का भी खतरा हो सकता है।

– सचिन दाँगी,
कक्षा–10

पहेलियाँ

हरा तान वह पहने आई,
फिरतीहै फूली-फूली।
गोरा रंग है नाम बताओ,
बात बड़ी है मामूली।।

एक भाषा जगत की ऐसी
जिसमें नहीं मात्रा कोई।
कौन-सी भाषा है बतलाओ,
अगर तुममें है अक्लमन्द कोई।

पहले तो हरा-भरा फिर लाल,
मेहमानों की है एक मिसाल।
एक बेल पर वह लगता है,
मँहगे दामों पर बिकता है।

शुरू कटे तो रज बने
आखिर कटे तो सूर।
धूल उसे नहीं ढँक सके,
कवि से है कोसों दूर।

ऐसी तुम एक कली बताओ,
नहीं कभी भी जो खिलती।
बिन पाले ही पल जाती है वह,
घर-घर में है वह मिलती।

जिसमें भर ले वही शक्ल ले,
वह जीवन का दूसरा नाम।
उसके बिना संसार सारा सूना,
कहीं किसी का चले न काम।

-गीतिका कुशवाह,
कक्षा 11 वाणिज्य

उत्तर - मूली, अंग्रेजी, पान, सूरज, छिपकली, जल

अंग्रेजी का भूत

अब सब पर अंग्रेजी का भूत चढ़ा है
घर-घर उसका राज्य बढ़ा है।
हैलो, हाय का प्रचार बढ़ा है
नमस्कार बेचारा हताश पड़ा है।
कभी कृष्ण और बलराम हुए,,
अब डिस्को भगवान हुए।
भूल गये सब शब्द शुक्रिया माफी,
अब सीखते हैं थैंक्यू और सॉरी।
अंधेरे में खो गयी सलवार-कमीज
उनके साथ गयी दया-तमीज,
अब दाल-भात से बचते हैं सब,
केक, पेस्ट्री खाते हैं सब।
गीत भजन समझ न आये,
माईकिल जैक्शन सबको भाये।
सब ओर अंग्रेजी की है बहार,
संस्कृति पर हो रहा है प्रहार।
क्योंकि अब सब पर अंग्रेजी का भूत चढ़ा है,
पर उसका राज्य बढ़ा है।

- पूजा गुर्जर
कक्षा-12 गणित

7 Secrets of Success.....

I found the answers in my room.
Roof said - Aim high.
Fan said - Be cool
Clock said - Every minute is precious.
Mirror said - Reflect before you act.
Window said - See the world.
Calendar said - Be up to date
Door said - Push hard to achieve your goals.

- Madhu Dangi
Class 9 (c)

Music is the medicine of the breaking heart.

बेटी

बेटी का जन्म
क्या कहूँ कि जो शुरुआत हुई,
जैसे तपते दिन में रात हुई।
सूरज ने ली सब किरणें समेट,
मातम ने घर को लिया चपेट।
सबकी शक्लें मुरझायी हैं,
हाय! लड़की घर में आयी है।
न थाली बजी, न पेड़े बँटे,
न मिली दुआ, न उतरी बला।
छायी आफत की परछायी है,
हाय! लड़की घर में आयी है।
पर माँ तो माँ है, क्या करती
कैसे देख उसे, आहें भरती।
ये रिश्ता जग से न्यारा है,
उसे तो बेटी का रूप भी प्यारा है।
पिता का दिल कुछ भारी है,
पर सन्तान उन्हें भी प्यारी है।
चिन्ता तो मन में,
मैं होंठों को सी लूँगा।
चार निवाले दे दो मुझको,
खुद दो घूँट पानी पी लूँगा।
बस दिल में गहरा दर्द भरा,
न सोना बढ़ा घड़ों में कभी।
न रकम बढ़ी है तिजोरी में,
बीत गये दिनों के साल कई।
एकदम से बिटिया बड़ी हुई,
कुछ भी कर अब पिता को तो,
बेटी का ब्याह रचाना है।
दहेज की माँग पूरी करने की,
खुद खड़े-खड़े बिक जाना है।
इतने पर भी उन्हें चैन कहाँ,
जो दहेज न कभी लेते हैं।
बस बेटी को अपनी उपहार दीजिये,
इतना ही कह देते हैं।
आवभगत की बात तो तय है,
कपड़े कितने दिलवाओगे।
ठाकुर जी के भोग को,
क्या न चाँदी के बर्तन लाओगे।
मारुति में ही गुजर करेंगे,
छोटे से फ्लेट में रह लेंगे।
बेटी को दो जो देना है,
हम दहेज कतई नहीं लेंगे।
तब रोती है ममता खुद पर,
और बाप का दिल भर आता है।
करना बेटी को मखमल-सा प्यार,
किसे नहीं आता है।
जब तक दहेज के दानव का,
विस्तार यहाँ न कम होगा।
तब तक गरीब के घरों में,
बेटी का जन्म मातम होगा।

- पायल जैन
कक्षा 10

दो और दो पाँच

गणित में दो और दो का योग हमेशा चार ही होता है, लेकिन मैंने 2+2 = 5 सिद्ध किया है। कैसे ? आईये आप भी जान लीजिये और मान लीजिये कि दो और दो पाँच भी हो सकता है। हम जानते हैं कि –

$$20 = 20$$
$$-20 = -20$$
$$25-45 = 16-36$$

दोनों पक्षो में 81/4 जोड़ने पर –

$$25 - 45 + 81/4 = 16-36 + 81/4$$

(सूत्र $(a-b)^2 = a^2+b^2-2ab$ के प्रयोग से)

$$(5-9/2)^2 = (4-9/2)^2$$

दोनों पक्षों का वर्गमूल लेने पर –

$$(5-9/2) = (4-9/2)$$

दोनों पक्षों में 9/2 जोड़ने पर

$$(5 - 9/2 + 9/2) = (4 - 9/2 + 9/2)$$
$$5 = 4$$
$$5 = 2 + 2$$

या $2 + 2 = 5$

अत: उपर्युक्तत नियम से सिद्ध होता है कि दो और दो पाँच होते हैं। तो मान गये न कि अब यह भी सम्भव है।

– कु. प्रज्ञा श्रीवास्तव, कक्षा 10

माँ

माँ, संवेदना है, भावना है,
अहसास है,
माँ, जीवन के फूलों में
खुशबू का वास है
माँ, रोते हुए बच्चे का
खुशनुमा पलना है
माँ, मरुस्थल में नदी या
मीठा-सा झरना है।
माँ, लोरी है गीत है, प्यारी-सी थाप है।
माँ, पूजा की थाली है, मन्त्रों का जाप है।
माँ, आँखों का सिसकता हुआ किनारा है।
माँ, गालों पर पप्पी है, ममता की धारा है।
माँ, झुलसते दिनों में, कोयल की बोली है।
माँ, मेहँदी है, कुमकुम है, सिन्दूर है, रोली है।
माँ, त्याग है, तपस्या है, सेवा है।
माँ, फूँक से ठण्डा किया कलेवा है।
माँ, कलम है, दवात की स्याही है।
माँ, परमात्मा की स्वयं एक गवाही है।
माँ, अनुष्ठान है, साधना है, जीवन का हवन है।
माँ, जिन्दगी के मोहल्ले में, आत्मा का भवन है।
माँ, चूड़ी वाले हाथों में, मजबूत कन्धों का नाम है।
माँ, काशी है, काबा है और चारों धाम है।
माँ, की यह गाथा अनादि है अध्याय नहीं।
माँ, का जीवन में कोई पर्याय नहीं
माँ, का महत्त्व दुनिया में कम हो नहीं सकता।
माँ, जैसा दुनिया में कोई हो नहीं सकता।

- ***अमित रघुवंशी***
कक्षा 10

एक रुपया कहाँ गया

सोहन और मोहन दोनों प्रतिदिन 30-30 नीबू लेकर बाजार में बेचने जाते थे। सोहन एक रुपये के दो नीबू बेचता था जबकि मोहन एक रुपये के तीन नीबू बेचता था। साहेन के 30 नीबू 15 रुपये के बिकते थे जबकि मोहन के 30 नीबू 10 रुपये के बिकते थे।

एक दिन सोहन बीमार पड़ गया तो उसने अपने 30 नीबू भी मोहन को बेचने के लिए दे दिये। मोहन ने अपने और सोहन के नीबू मिला लिये, तो कुल 60 नींबू हो गये। अब वह एक के दो सोहन के व एक के तीन अपने नीबू के हिसाब से मिलाकर दो रुपये के पाँच नीबू बेचने लगा, लेकिन यह क्या जब उसने 2 रुपये के 5 के हिसाब से 60 नीबू बेचे तो उसे 24 रुपये मिले।

अब प्रश्न यह है कि जब दोनों अलग-अलग नीबू बेचते थे तो दोनों के 15+10 = 25 रुपये के नीबू बिकते थे लेकिन अब दोनों मिलाकर बेचने पर नीबू के 24 रुपये ही मिले। आखिर एक रुपया गया तो गया कहाँ? जरा ढूँढने में मेरी मदद कीजिये।

- **अक्षय श्रीवास्तव**, कक्षा 7

समय को सीखो चक्र से

हमारे तिरंगे के बीचोंबीच स्थित चक्र मूल रूप से न्याय का प्रतीक है, लेकिन इससे तुम टाइम मैनेजमेंट भी सीख सकते हो। ठीक एक घड़ी की तरह जो अनवरत घूमती रहती है, एक घड़ी हमें बताती है कि जीवन में समय की कद्र करना कितना जरूरी है। सोचे अगर समय पर सूरज न निकले, चाँद न आये और फसलें न उगें तो ....? जीवन की कल्पना समझकर और सहेजकर चलना बहुत जरूरी है। मूल रूप से नेवी ब्लू कलर के इस चक्र में 24 ताड़ियाँ होती हैं, जिन्हें तुम चौबीस घण्टों का प्रतीक भी मान सकते हो।

इसके अलावा जिस भी डण्डे या आधार पर झण्डा फहराता रहता है, वह आधार प्रतीक होता है जिम्मेदारियों का। आप अपने काम, अपने देश और खुद के प्रति कितने जिम्मेदार होंगे, उतने ही सफल भी बनेंगे। इसलिए जिम्मेदारी के साथ पूरी लगन से खड़े रहने का गुण हम झण्डे को सहेजकर खड़े उसके आधार से सीख सकते हैं।

अनिरुद्ध शर्मा, कक्षा 8, डॉल्फिन

''पुण्य के उदय से प्राप्त शक्तियों को जो बाँटता है वह सदा मधुर बना रहता है।''

परीक्षा-परिणाम

कक्षावार मेरिट-सूची वर्ष -2014

कक्षा	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	माता का नाम	प्राप्तांक	प्रतिशत	स्थान
शिशु'क'	सुमित अहिरवार	श्री कोतलसिंह	श्रीमती सुनीता	198	99%	प्रथम
शिशु'क'	आयुषी दाँगी	श्री भारतसिंह दाँगी	श्रीमती अभिलाषा	196	98%	द्वितीय
शिशु'क'	सुमिति मीना	श्री वीरेन्द्रसिंह मीना	श्रीमती विमलाबाई	195	97.5%	तृतीय
शिशु'ख'	गौरव मैना	स्व. श्री शिवनारायण	श्रीमती रुकमणि	198	99%	प्रथम
शिशु'ख'	कु. खुशबू बैना	श्री मुन्ने खां बैना	श्रीमती जरीना बी	197	98.5%	द्वितीय
शिशु'ख'	विवेक दाँगी	श्री अवधेश दाँगी	श्रीमती कविता दाँगी	196	98%	तृतीय
शिशु'ख'	हर्ष दाँगी	श्री जालमसिंह दाँगी	श्रीमती राजकुमारी	195	97.5%	चतुर्थ
शिशु'ख'	कु. आयुषी यादव	श्री हुकुमसिंह यादव	श्रीमती ममता	195	97.5%	चतुर्थ
कक्षा–1	कृष राठौर	श्री विजयसिंह राठौर	श्रीमती विनीता	818/930	87.95%	प्रथम
कक्षा–1	विष्णुप्रसाद लोधी	श्री आशाराम लोधी	श्रीमती रामकलीबाई	803/930	86.34%	द्वितीय
कक्षा–1	विकास पटेल	श्री महेन्द्र पटेल	श्रीमती मनीषा पटेल	792/930	85.16%	तृतीय
कक्षा–2	कु. सुहानी रघुवंशी	श्री रामकृष्ण रघुवंशी	श्रीमती भूरीबाई	893/930	96.02%	प्रथम
कक्षा–2	कु. उमाश्री शर्मा	श्री चन्द्रकुमार शर्मा	श्रीमती रोहिणी	891/930	95.80%	द्वितीय
कक्षा–2	कु. महिमा दाँगी	श्री शम्भूसिंह दाँगी	श्रीमती रानी दांगी	888/930	95.48%	तृतीय
कक्षा–3	कु. खुशी साहू	श्री शोभाराम शर्मा	श्रीमती विनीता	1118/1150	97.21%	प्रथम
कक्षा–3	कु. निधि शर्मा	श्री राजेन्द्र शर्मा	श्रीमती अनीता	1117/1150	97.13%	द्वितीय
कक्षा–3	कु. स्वाति राजपूत	श्री ब्रजभानसिंह	श्रीमती शिवकुमारी	1115/1150	96.95%	तृतीय
कक्षा–4	कु. विपाशा दांगी	श्री राघवेन्द्रसिंह दाँगी	श्रीमती रमाबाई	1130/1150	98.2%	प्रथम
कक्षा–4	कु. अनुमति जेतली	श्री सन्दीप जेतली	श्रीमती सरोज	1115/1150	97.00%	द्वितीय
कक्षा–4	वैष्णवी राजपूत	श्री नारायणसिंह	श्रीमती पिंकीदेवी	1106/1150	96.17%	तृतीय
कक्षा–5	सुरेन्द्रसिंह दाँगी	श्री सुन्दरसिंह दाँगी	श्रीमती अनीता	1121/1150	97.47%	प्रथम
कक्षा–5	कु. रौनक दाँगी	श्री रामावतारसिंह	श्रीमती अंजना	1112/1150	96.69%	द्वितीय
कक्षा–5	कु. प्रियंका रघुवंशी	श्री पूरनसिंह रघुवंशी	श्रीमती शिवकुमारी	1096/1150	95.30%	तृतीय

कक्षा	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	माता का नाम	प्राप्तांक	प्रतिशत	स्थान
कक्षा–6	कु. प्रार्थना लोधी	श्री हरिनारायण लोधी	श्रीमती शीलाबाई	1650/1710	96.49%	प्रथम
कक्षा–6	कु. सीमा सौजन्य	श्री कपूरसिंह सौजन्य	श्रीमती राजकुमारी	1649/1710	96.43%	द्वितीय
कक्षा–6	कु. मुस्कान ठाकुर	श्री बाबूसिंह ठाकुर	श्रीमती क्रान्ति ठाकुर	1647/1710	96.31%	तृतीय
कक्षा–7	कु. आस्था दुबे	श्री देवेन्द्र दुबे	श्रीमती शोभा दुबे	1675/1710	97.95%	प्रथम
कक्षा–7	कु. अपूर्वा रघुवंशी	श्री अजीतसिंह	श्रीमत प्रीति रघुवंशी	1649/1710	96.43%	द्वितीय
कक्षा–7	कु. तनु ठाकुर	श्री बाबूसिंह ठाकुर	श्रीमती क्रान्ति	1648/1710	96.37%	तृतीय
कक्षा–8	कु. शेख रमीम	श्री शेख साबिर	श्रीमती शहाना	1686/1710	98.59%	प्रथम
कक्षा–8	कु. सोनम रघुवंशी	श्री नारायणसिंह	श्रीमती नन्नीबाई	1682/1710	98.36%	द्वितीय
कक्षा–8	कु. निकिता दाँगी	श्री सुरेन्द्रसिंह दाँगी	श्रीमती हेमलता	1661/1710	97.13%	तृतीय

विभिन्न कक्षाओं में विशिष्ट योग्यता वाले विद्यार्थी

क्र.	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	विषय	प्राप्तांक
1	सुमित अहिरवार	श्री कोतलसिंह	शिशु–क	गणित	50 / 50
2	सुमिति मीना	श्री वीरेन्द्रसिंह	शिशु–क	गणित	50 / 50
3	देव रघुवंशी	श्री वीरेन्द्रसिंह	शिशु–क	गणित	50 / 50
4	कु. बबीता अहिरवार	श्री लखनसिंह	शिशु–ख	गणित	50 / 50
5	कु. समीक्षा कुशवाह	श्री नवलसिंह	शिशु–ख	गणित	50 / 50
6	अभिषेक विश्वकर्मा	श्री मोहरसिंह	शिशु–ख	अंग्रेजी	50 / 50
7	कु. महक कुर्मी	श्री दिनेश कुर्मी	शिशु–ख	अंग्रेजी	50 / 50
8	विनय राजपूत	श्री सजनसिंह	शिशु–ख	अंग्रेजी	50 / 50
9	हर्ष दाँगी	श्री जालमसिंह	शिशु–ख	अंग्रेजी	50 / 50
10	विवेक दाँगी	श्री अवधेश दाँगी	शिशु–ख	अंग्रेजी	50 / 50
11	ध्रुव साहू	श्री शोभाराम	शिशु–ख	अंग्रेजी	50 / 50
12	अंकेश अहिरवार	श्री रामबाबू अहिरवार	शिशु–ख	अंग्रेजी	50 / 50
13	कु. खुशबू बैना	श्री मुन्ने खाँ	शिशु–ख	अंग्रेजी	50 / 50
14	गौरव मैना	स्व. श्री शिवनारायण	शिशु–ख	अंग्रेजी	50 / 50
15	कु. कशिश रघुवंशी	श्री विष्णु रघुवंशी	एक	गणित	99 / 100
16	कृष राठौर	श्री विजयसिंह	एक	गणित	99 / 100
17	विश्वजीत राठौर	श्री शक्तिसिंह	एक	गणित	99 / 100
18	कु. महिमा दांगी	श्री शम्भूसिंह दांगी	दो	गणित	98 / 100
19	कु. उमाश्री शर्मा	श्री चन्द्रकुमार शर्मा	दो	हिन्दी	97 / 100
20	अरबाज खाँ	श्री फरीद खाँ	तीन	गणित	100 / 100
21	कु. रितिका कुर्मी	श्री रामकेश	तीन	पर्यावरण	100 / 100

क्र.	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	विषय	प्राप्तांक
22	कु. स्वाति राजपूत	श्री बृजभानसिंह	तीन	गणित	99 / 100
23	कु. विपाशा दाँगी	श्री राघवेन्द्रसिंह	चार	अंग्रेजी	99 / 100
24	कु. अनुमति जेतली	श्री सन्दीप जेतली	चार	अंग्रेजी, पर्यावरण	100 / 100
25	कु. वैष्णवी राजपूत	श्री नारायणसिंह	चार	हिन्दी	99 / 100
26	कु. रौनक दांगी	श्री रामावतारसिंह	पाँच	पर्यावरण	99 / 100
27	कु. प्रियंका रघुवंशी	श्री पूरनसिंह रघुवंशी	पाँच	अंग्रेजी	99 / 100
28	सुरेन्द्रसिंह दांगी	श्री सुन्दरसिंह	पाँच	गणित	99 / 100
29	कु. सोनम रघुवंशी	श्री नारायणसिंह	आठ	गणित	100 / 100

परीक्षाफल एक नजर में

नवांकुर विद्यापीठ प्राथमिक विभाग

कक्षा	कुल छात्र	सम्मिलित छात्र	उत्तीर्ण छात्र	ग्रेड					प्रतिशत
				A	B	C	D	E	
शिश 'क'	112	111	97	72	12	12	01	15	87.38%
शिश 'ख'	139	138	137	97	25	12	03	02	99.27%
01	137	137	137	22	74	39	02	-	100%
02	138	137	137	44	34	55	04	01	100%
03	109	109	101	50	30	20	01	08	92.66%
04	149	149	133	47	36	44	06	16	89.26%
05	139	1390	137	29	44	54	10	02	98.56%

नवांकुर विद्यापीठ माध्यमिक विभाग

कक्षा	कुल छात्र	सम्मिलित छात्र	ग्रेड					प्रतिशत
			A	B	C	D	E	
6th	157	157	39	44	65	04	05	96.81%
7th	201	201	80	65	53	02	01	99.50%
8th	206	206	94	72	35	01	04	98.05%

DOLPHIN

From the house of Navankur

Merit List - 2014

Class	Student's name	Father's name	Mother's name	Marks	Rank	Per.
Nur.	Ku. Ashi Dubey	Mr. Harinarayan	Mrs. Jyoti	200/200	Ist	100%
	Ku. Tanishka Jain	Mrs. Mahesh	Mrs. Rashmi	200/200	Ist	100%
	Ishan Saini	Mr. Suresh	Mrs. Sunita	200/200	Ist	100%
	Rudrapratap Singh Raghuwanshi	Mr. Dharmendra	Mrs. Varsha	200/200	Ist	100%
	Rachit Dixit	Mr. Vinod	Mrs. Sonam	200/200	Ist	100%
	Ku. Ashtha Raghuwanshi	Mr. Jagat Singh	Mrs. Mamta	200/200	Ist	100%
	Ku. Sakshi Jain	Mr. Sanjeev Kumar	Mrs. Sinky	200/200	Ist	100%
	Ku. Khushi Dangi	Mr. Ramraj Singh	Mrs. Ritu	200/200	Ist	100%
	Ku. Nishi Arora	Mr. Santosh	Mrs. Dipika	200/200	Ist	100%
	Ku. Rishika Garg	Mr. Mahesh Chand	Mrs. Pratibha	200/200	Ist	100%
	Sumit Yadav	Mr. Samundar Singh	Mrs. Rani	200/200	Ist	100%
	Ku. Many Rai	Shri Naveen	Mrs. Sonali	200/200	Ist	100%
	Ku. Sanyogita Rajput	Mr. Indar Singh	Mrs. Jyoti	200/200	Ist	100%
	Harsh Jain	Mr. Dinesh	Mrs. Swati	200/200	Ist	100%
	Ku. Mahima Thakur	Mr. Chandra Prakash	Mrs. Reena	199/200	IInd	99.5%
	Ku. Astha Raghuwanshi	Mr. Devendra	Mrs. Rani	199/200	IInd	99.5%
	Ku. Tanushre Agrawal	Mr. Ashvini	Mrs. Nandini	199/200	IInd	99.5%
	Ku. Vanshika Rahguwa.	Mr. Seetaram	Mrs. Rachna	199/200	IInd	99.5%
	Ku. Aarohi Audichya	Mr. Sanjay	Mrs. Rupali	199/200	IInd	99.5%
	Ku. Anshuma Shrivastava	Mr. Manoj	Mrs. Seema	199/200	IInd	99.5%
	Atharv Tiwari	Mr. Arvind	Mrs. Shobha	199/200	IInd	99.5%
	Saksham Chouksey	Mr. Govind	Mrs. Sanjana	199/200	IInd	99.5%
	Divyansh Dangi	Mr. Gajendra Singh	Mrs. Sushma	199/200	IInd	99.5%
	Kanishka Raghuwanshi	Mr. Prahlad Singh	Mrs. Seema	199/200	IInd	99.5%
	Dev Gupta	Mr. Kamlesh	Mrs. Bharti	199/200	IInd	99.5%
	Ku. Gouri Raghuwanshi	Mr. Bhupat Singh	Mrs. Ramsuti	198/200	IIIrd	99%
	Ku. Rashi Tiwari	Mr. Rohit	Mrs. Rashmi	198/200	IIIrd	99%
	Shiva Raghuwanshi	Mr. Jitendra	Mrs. Sangeeta	198/200	IIIrd	99%
	Naman Rajput	Mr. Gajendra	Mrs Reena	198/200	IIIrd	99%

''जिसका स्वभाव कड़वा होता है उसकी जबान भी कड़वी होती है। अपने कटु स्वभाव को सु–भाव में प्रवृत्त करो।''

Class	Student's name	Father's name	Mother's name	Marks	Rank	Per.
Nur.	Atharv Bakshi	Mr. Avinash	Mrs. Aditi	198/200	IIIrd	99%
	Ku. Pranjali Lodhi	Mr. Krishna Pal	Mrs. Chhaya	198/200	IIIrd	99%
	Danish Mansury	Mr. Javed	Mrs. Farha	198/200	IIIrd	99%
	Ku. Vaishnavi Soni	Mr. Ramkumar	Mrs. Preeti	198/200	IIIrd	99%
	Ku. Bhavna Sharma	Mr. Sunil Kumar	Mrs. Chandana	198/200	IIIrd	99%
	Ku. Vaishavi Bhargav	Mr. Srikant	Mrs. Jyoti	198/200	IIIrd	99%
	Jay Sen	Mr. Manish	Mrs. Rajkumari	198/200	IIIrd	99%
	Rohit Raghuwanshi	Mr. Brijesh	Mrs. Rampyari	198/200	IIIrd	99%
	Ku. Radhika Bhargav	Mr. Gajanand	Mrs. Sunita	198/200	IIIrd	99%
	Shoury Pratap Rajput	Mr. Rakesh	Mrs. Rajkumari	198/200	IIIrd	99%
	Lakshya Raghuwanshi	Mr. Hari Brijendra	Mrs. Bhoori Bai	198/200	IIIrd	99%
K.G.-I	Ku.Tanushri Raghu.	Mr.Sitaram	Mrs.Rachna	200/200	Ist	100%
	Shoury Sharma	Mr. Rakesh	Mrs.Preeti	200/200	Ist	100%
	Ku. Shree Sharma	Mr.Pawan	Mrs.Magha	199/200	IInd	99.5%
	Ku. Ankita Rajput	Mr. Ajay Shankar Singh	Mrs. Madhu	199/200	IInd	99.5%
	Ku. Pallavi Raghuwanshi	Mr. Yashpal	Mrs. Ganga	199/200	IInd	99.5%
	Ku. Sneha Raghuwanshi	Mr. Rambabu	Mrs. Archna	199/200	IInd	99.5%
	Ku. Anushka Sharma	Mr. Deepak	Mrs. Manorama	199/200	IInd	99.5%
	Ku. Khushi Jain	Mr. Pankaj	Mrs.Bharti	198/200	IIIrd	99%
	Rishab Lodhi	Mr. Yogesh	Mrs.Chanda	198/200	IIIrd	99%
	Saksham Jatav	Mr. Sunil	Mrs. Santoshi	198/200	IIIrd	99%
KG-II	Ku. Bipasha Thakur	Mr. Rajendra	Mrs. Lekhni	199/200	I	99.9%
	Ku. Praneta Namdev	Mr. Mukesh	Mrs. Jyoti	196/200	II	98%
	Darsheel Shrivastava	Mr. Rakesh	Mrs. Preeti	195/200	III	97.5%
Std-I	Ku. Saloni Vishwakarma	Mr. Ramsevak	Mrs. Meera Bai	929/930	I	99.8%
	Ku. Sonam Meena	Mr. Raghuveer Singh	Mrs. Sheela Bai	928/930	II	99.7%
	Aditya Meena	Mr. Balveer Singh	Mrs. Vimla	915/930	III	98.3%
Std-II	Ku. Avni Jain	Mr. Rajiv Jain	Mrs. Rajni	920/930	I	99%
	Ku. Niharika Tiwari	Mr. Sushil	Mrs. Alpna	911/930	II	98%
	Ku. Naina Kori	Mr. Ghanshyam Das	Mrs. Seema	910/930	III	97.84%

Class	Student's name	Father's name	Mother's name	Marks	Rank	Per.
Std-III	Yash Raghuwanshi	Mr. Yogesh	Mrs. Vinita	1131/1150	I	98.34%
	Kanishk Richariya	Mr. Pawan Richariya	Mrs. Nidhi	1117/1150	II	97.13%
	Ritika Choudhary	Mr. Rajesh Choudhary	Mrs. Suman	1114/1150	III	96.86
Std-IV	Himanshu Raghuwanshi	Mr. Devendra Singh	Mrs. Jaishree	1118/1150	I	97.21%
	Khushi Raghuwanshi	Mr. Kilan Singh	Mrs. Rano	1114/1150	II	96.86%
	Harshit Sikarwar	Mr. Devendra Singh	Mrs. Bharti	1111/1150	III	96.60%
Std-V	Harsh Jain	Mr. Manoj Jain	Mrs. Preeti	1125/1150	I	97.50%
	Anshul Meena	Mr. Raghuveer	Mrs. Sheela	1117/1150	II	97.10%
	Ku. Divya Shrivastava	Mr. Sushil	Mrs. Savita	1105/1150	III	96%
Std-VI	Ku. Kanu Priya Mehta	Mr. Rajendra Mehta	Mrs. Vandana	1656/1710	I	96.8%
	Kaushik Raw Jatav	Mr. Rawsahab Jatav	Mrs. Sarita	1604/1710	II	93.8%
	Ku. Chitranshi Shrivas.	Mr. Omprakash	Mrs. Madhu	1563/1710	III	91.4%
Std-VII	Aishwarya Dangee	Mr. Avinash Dangee	Mrs. Archana	1631/1710	I	95.3%
	Shilpi Raghuwanshi	Mr. Yujvendra Singh	Mrs. Vinita	1625/1710	II	95%
	Sneha Harkila	Mr. J.L.Harkila	Mrs. Kiran	1560/1710	III	91.2%
Std-VIII	Aniruddha Sharma	Mr. Arvind Sharma	Mrs. Neha	1621/1710	I	94.79%
	Pragya Rajpoot	Mr. Brijraj Rajpoot	Mrs. Geetanjali	1516/1710	II	88.65%
	Twinkle Upadhyay	Mr. Jitendra Upadhyay	Mrs. Jyoti	1504/1710	III	87.95%

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले
सभी छात्र-छात्राओं को विद्यालय-परिवार की
ओर से

हार्दिक बधाई.....!

Congratulation....!

RESULT AT A GLANCE-2014

Class	Total Students	Appeared Students	Pass Students	Grade					Percentage
				A	B	C	D	E	
Nursery	177	176	176	153	13	04	06	01	99.43%
K.G.I	122	122	122	100	12	08	02	-	100%
K.G.II	114	114	114	71	25	13	5	-	100%
I	93	93	93	79	12	02	-	-	100%
II	95	95	95	80	14	01	-	-	100%
III	68	68	68	40	17	11	-	-	100%
VI	65	65	65	44	12	09	-	-	100%
V	66	66	66	39	19	07	-	-	100%
VI	65	65	65	25	24	15	01	-	100%
VII	53	53	53	24	15	14	-	-	100%
VIII	29	29	29	15	12	02	-	-	100%

नवांकुर संगीत-विद्यालय

प्रयाग-संगीत-समिति इलाहाबाद से सम्बद्ध

अब शास्त्रीय संगीत-शिक्षा सबके लिए

1 अप्रैल, 2014 से

प्रवेश प्रारम्भ

गायन, तबला-वादन, वायलिन-वादन,
हारमोनियम-वादन

कक्षाएँ :

समय : सायं 5 से 7 बजे तक
तथा ग्रीष्म-अवकाश में
प्रातः 8 से 11 बजे तक

सम्पर्क : नवांकुर-मुख्य भवन,
बरेठ रोड, गंज बासौदा,

फोन : 221066, 223399

क्रियाशील प्रगति–परिषद् द्वारा संचालित

पंजीयन क्रमांक 5836/20.08.1977

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त

नवांकुर स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साईंस

• अनुभवी एवं योग्य शिक्षकों द्वारा अध्यापन एवं प्रशिक्षण •

• आधुनिक एवं सुसज्जित कम्प्यूटर प्रयोगशाला •

प्रवेश 2 जुलाई से प्रारम्भ – स्थान सीमित ....

नवांकुर भवन, बरेठ रोड, गंजबासौदा दूरभाष : 221066

समय – प्रातः 9 से दोप. 12 बजे तक

email : nvpbsd_2007@ rediffmail.com, Website : www.navankurvidyapeeth.org

परीक्षा–परिणाम (सत्र 2014)

PGDCA - Toppers of Institute

No.	Name of Student	Father's Name	Sem	Obtained Marks
01	Poonam Kushwah	Sh. Bhujbal Singh	Ist Sem	454/550
02	Monika Raghuwanshi	Sh. Bheem Singh	IInd Sem	354/450

DCA - Toppers of Institute

No.	Name of Student	Father's Name	Sem	Obtained Marks
01	Poonam Raghuwanshi	Sh. Jaswant Singh	Ist Sem	258/350
02	Mayank Lahori	Sh. Girish Lahori	IInd Sem	277/350

Honesty is the best policy. (Collected by - **Lakhmi Chand Sahu,** Lect. Maths)

DOLPHIN The school of Wisdom

Sports-2013-14

नन्ही-कूची

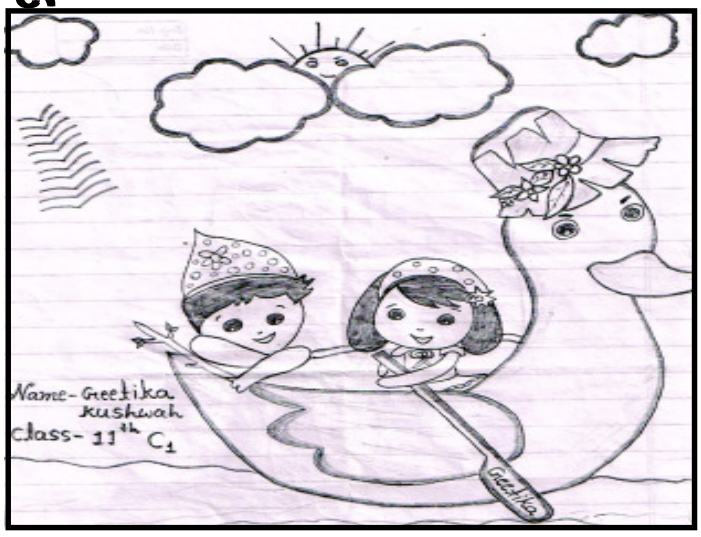

कार्यालय-नवांकुर उ.मा.विद्यालय, गंजबासौदा, जिला विदिशा (म.प्र.)

दूरभाष - 07594-221066

विद्यालय में सत्र - 2014-15 हेतु संभावित रिक्तियाँ इस प्रकार है :-

क्र.	कक्षा	प्रवेश रिक्तियाँ
1.	के.जी.-I	105
2.	के.जी.-II	20
3.	कक्षा-1	20
4.	कक्षा-2	10
5.	कक्षा-3	10
6.	कक्षा-4	20
7.	कक्षा-6	30
8.	कक्षा-9	80
9.	कक्षा-11 (गणित/जीवविज्ञान/वाणिज्य)	90

प्रवेश 16 अप्रैल 2014 से प्रारम्भ होंगे।

सम्पर्क समय - प्रातः 8.30 से 11.30 तक

नवांकुर विद्यापीठ, गंजबासौदा

विद्यालय की एक और उल्लेखनीय पहल

अब सभी कक्षाओं के परीक्षा परिणाम **Online ऑनलाईन** देखे जा सकते हैं।

प्राथमिक व माध्यमिक कक्षाओं के परिणाम देखने हेतु दि. 14 अप्रैल 2014 एवं कक्षा 9 व 11 के परिणाम देखने हेतु 29 अप्रैल 2014 को हमारी बेवसाईट **www. navankurvidyapeeth.org** पर सायं 5 बजे से **visit** करें।